शैल चित्रों की प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

लखनऊ। भारत, अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, तथा यूरोप के शैल चित्रों के रंगीन चित्रों एवं भारत के अनेक प्रदेशों की शैल चित्रकला की प्रतिलिपियों की आकर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाजपई ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की संयुक्त सचिव वीना जोशी की उपस्थिति में किया। ओडीसा के जनजाति शैली पर आधारित कुटिया दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण रही.

अगले सत्र में आंचलिक विज्ञान नगरी के प्रेक्षागार में परियोजना समन्वयक द्वारा स्वागत के उपरान्त, दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कल केंद्र के डॉ. बी एल मल्ला ने शैल चित्र का विश्व परिदृश्य दिखाते हुए कहा कि सम्पूर्ण विश्व में चिंतन का विकास एक प्रकार हुआ होगा और इसी लिए पांच उपमहद्वीपों के शैलचित्रों में इतनी समानता है। उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शनी देश भर में प्रस्तावित प्रदर्शनियों की कड़ी में नवीन है. वीणा जोशी ने शैल चित्र सम्बन्धी जानकारी जनसामान्य तक पहुँचाने पर बल दिया तथा कहा कि अनेक संगठनों का इस अध्ययन के लिए मिल कर कार्य करना विषय के लिए हित की बात है। बच्चों तक अपने आदिम मानव की कला क्षमता को पहुँचाना महत्त्वपूर्ण है। इस मौके पर राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला के महानिदेशक विशिष्ट अतिथि डॉ. बी वी खरबडे ने बताया कि उनकी संस्था ऐसे हर कार्य में मिल कर चलने को तत्पर है। उन्होंने कहा की ऐसी सम्पदा का संरक्षण आवश्यक है तथा उनका संगठन इससे जुड़ेगा। मुख्य अतिथि प्रो. सुनील बाजपई ने कहा की अब शैल चित्रों के उपयोग से समझी जानी आवश्यक है.

प्रदर्शनी में बोलते वक्ता

इसमें कला एवं विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का संगम है। उत्तर प्रदेश की शैल चित्र समिति के समन्वयक एवं बीइसआईपी के विज्ञानी डॉ. चन्द्र मोहन नौटियाल ने बताया की यह अध्ययन अनेक चरणों में पूर्ण होगा जिनमे शैल चित्र खोजना, सम्बंधित जानकारी को समेकित करना, आयु निर्धारण के लिए उपयुक पदार्थ की तलाश जारी रखना तथा मिल जाने पर उसके विश्लेषण का प्रयास करके ही इस मिशन को पूर्ण किया जा सकता है। भारत के गिने- चुने शैल चित्र के लिए ऐसे प्रयास हुए हैं तथा वह भी विदेशों में जबकि ए सी कार्लाइल ने विश्व में सबसे पहले १८८१ में मिर्जापुर में शैल चित्र की खोज की थी। इस मौके पर लखनऊ विश्वविद्याल के प्रो. डी पी तिवारी ने उत्तर प्रदेश के शैल चित्र विषय पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने अनेक प्रकार के शैलचित्रों को परिभाषित करते हुए विशेष रूप से सोनभद्र के शैलचित्रों के चित्र दिखाए तथा उनकी व्याख्या भी प्रस्तुत की।